पशु स्वास्थ्य

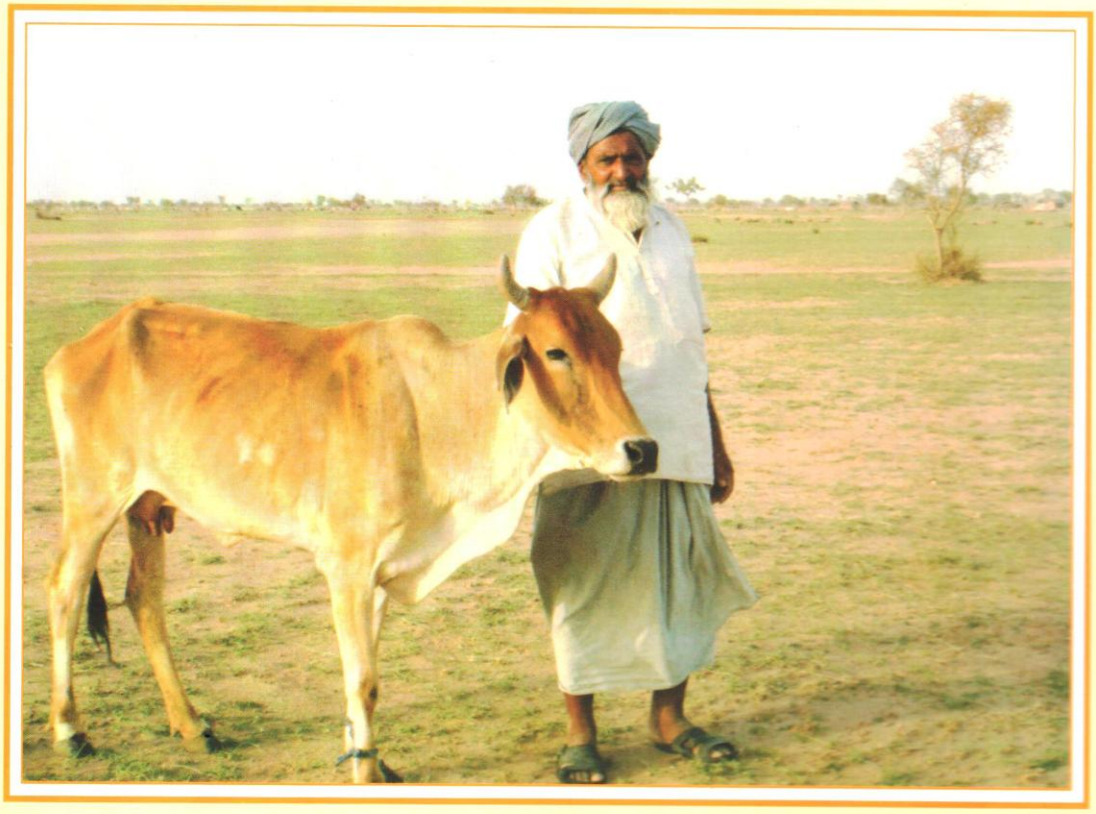

Cravis

HelpAge International

age helps

पशु स्वास्थ्य

रोग एवं निदान मार्गदर्शिका

संस्करण : 2013

प्रकाशक
ग्राविस
ग्रामीण विकास विज्ञान समिति
3/437, 3/458, मिल्कमैन कॉलोनी,
पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

फोन: 0291-2785317, 2785116
फैक्स: 0291-278116
वेबसाईट: www.gravis.org.in
ई-मेल: email@gavis.org.in

संपादक: डॉ. प्रकाश त्यागी

ISBN 978-81-977754-7-5

यूरोपियन यूनियन व हैल्पेज इन्टरनेशनल (यू.के.) के आर्थिक सहयोग से पी.ओ.सी. के अन्तर्गत प्रकाशित

पशु एक मूक प्राणी है। अतः उनके बीमार हो जाने पर निम्न लक्षणों द्वारा पहचाना जाता है । अस्वस्थ पशु के प्रारम्भिक लक्षण निम्नलिखित हैं–

- गाय, भैंस इत्यादि जुगाली करन वाले पशुओं का जुगाली बन्द कर देना
- भोजन के प्रति अरूचि
- सामान्य तापक्रम और श्वास गति में परिवर्तन (कम अथवा अधिक)
- आँख, कान, नाक, मुंह, योनि अथवा गुदा मार्ग में पानी जैसे पदार्थ का स्राव
- मल–मूत्र के रंग, मात्रा आदि में परिवर्तन
- पशु का उदास रहना
- पशु का अधिक विश्राम करना
- चमकहीन आँखें और ढीली त्वचा

पशुओं में मुख्यतः दो प्रकार के रोग पाये जाते है–

I. साधारण रोग

II. संक्रामक रोग

I. साधारण रोग

साधारण रोग वे रोग होते है जो संक्रामक नहीं होते हैं अर्थात वे छूने से नहीं फैलते है। इन रोगों को असंक्रामक रोग भी कहते है।

साधारण रोगों का विवरण निम्नलिखित है

1. अपच (बदहजमी)

इस रोग में पशु की पाचन क्षमता खराब हो जाती है।

लक्षण

- चारा–पानी लेना बन्द करना
- जुगाली नहीं करना
- नथूनों का सूख जाना
- तापक्रम, श्वास गति तथा नाड़ी गति का असामान्य होना
- दूध उत्पादन में कमी

कारण

- दूषित भोजन अथवा पानी
- चारे / मौसम में परिवर्तन
- पेट में कीड़ों का होना
- मेहनत कम एवं आराम अधिक
- अधिक मात्रा में भोजन खाना
- आंवल खा जाना
- पशु की उम्र अधिक होना

उपचार

- सर्वप्रथम रोग के कारण का ज्ञान कर उसी क अनुरूप उचित उपचार कराना चाहिए।
- यदि पेट में कीड़े हो तो कृमिनाशक औषधियाँ देनी चाहिए।
- पशु को 24 घण्टे तक भूखा रखकर तत्पश्चात् हल्का चारा थोड़ी–थोड़ी मात्रा में दिया जाना चाहिए।
- पशु को नियमित व्यायाम अथवा घुमाना/फिराना चाहिए।
- यदि गोबर करने में कष्ट हो तो एनिमा देना चाहिए।
- रेशेवाला भोजन खिलाना चाहिए।
- पाचन शक्ति की वृद्विकरने हेतु कुचला शुद्व 8 ग्राम, जेन्शियन चूर्ण 30 ग्राम, सौंठ चूर्ण 60 ग्राम, खाने का सोडा 30 ग्राम मिलाकर आधी–आधी मात्रा सुबह और सांय खिलाना चाहिए।

2. एमिबोसाइटिस

इस रोग को आमाशय प्रदाह भी कहते है। इसमें आमाशय की झिल्ली में सूजन आ जाती है।

लक्षण

इस रोग में पशु बेचैन रहता है, पेट में दर्द रहता है, बार–बार उठता–बैठत है और दाँत पीसता है। कभी–कभी दस्त भी होने लगते है। पेट की ओर पैर मारता है। भोजन लेने के पश्चात् पीड़ा होती है। वमन में बिना हजम किया हुआ भोजन आता है। सामान्यतः कब्ज रहती है। इस रोग पर शुरू में ही उपचार कर लेना चाहिए अन्यथा यह गम्भीर स्थिति में पशु को पहुँचा देता है।

कारण

- अधिक मात्रा में भोजन
- बाहरी ठोस वस्तुएं खा लेना
- अधिक ठण्डा अथवा गर्म भोजन
- दूषित भोजन
- जहरीले पौधों को खा लेना
- अधिक थकावट

उपचार

- सर्वप्रथम पशु को 1–2 दिन तक बिना आहार के रखा जाए तथा पेट पर सरसों का तेल को गर्म करके लेप किया जावें।
- यदि कोई ठोस बाहरी वस्तु खा गया है तो पशु को दस्त लगने वाली औषधि दी जानी चाहिए। इसके लिए अलसी का तेल पिलाना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त हरमिन्सा/हिमालय बत्तीसा 30–50 ग्राम, तथा मीठा सोडा 30 ग्राम गुड़ में मिलाकर सुबह–शाम खिलाना चाहिए।
- रोग की गम्भीरता को देखते हुए आवश्यक चिकित्सकीय सेवा ली जानी चाहिए।
- दर्द होने पर बैरालगन या एनाफोर्टन या एट्रीपीन की 1–2 मिली. की मात्रा/1–2 गोलियां देनी चाहिए।
- भूख के लिए विटामिन की टेबलेट देवें।

3. आफरा

इस रोग में पशु का पेट फूल जाता है। यदि पशु की चिकित्सा नहीं की जाती है तो गंभीर परिणाम हो सकते है।

लक्षण

- पेट फूलना
- पेट थपथपाने पर ढोल जैसी आवाज आना
- पशु का बेचैनी महसूस करना
- खाना–पीना एवं जुगाली बन्द करना
- तेज आवाज में सांसें लेना
- मुंह से लार गिरना
- पशु का गोबर पेशाब बन्द करना

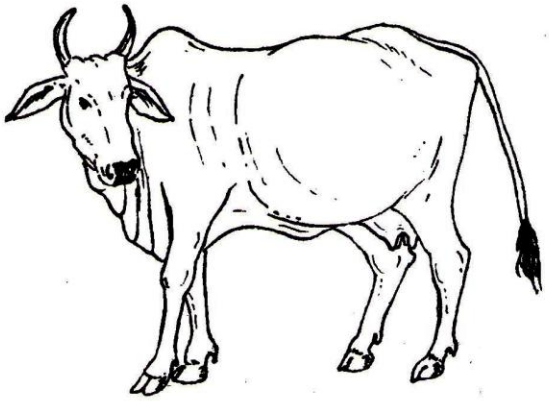

कारण

- दूषित भोजन
- वर्षा से भीगा चारा खाना
- कार्य करने के शीघ्र बाद शीतल पानी पीना
- एक ही करवट से अधिक समय तक लेटना
- एलर्जी होना
- गले में रूकावट होना

उपचार

- पशु को घुमाना चाहिए।
- तारपीन का तेल में हींग मिलाकर पेट के बायीं ओर मालिश करें।
- तारपीन का तेल 50 मिली. तथा अलसी का तेल 500 मिली. मिलाकर पिलावें।
- वायुनाशक दवा एमनकार्ब 4 ग्राम, मीठा सोडा 30 ग्राम, सोंठ 8 ग्राम, शुद्वकुचला 3 ग्राम और कुटकी 8 ग्राम मिलाकर चटावें।
- पेट दर्द होने पर बैरालगन/स्पासमिडोन/रिडालपीन टेबलेट देनी चाहिए।
- मुख के जबड़ों के बीच लकड़ी का टुकड़ा लगा देवें।
- 10 ग्राम हींग और 250 मिली. मीठे तेल को मिलाकर पशु को पिलावें।
- गंभीर स्थिति होने पर चिकित्स से परामर्श लेवें।

4. दस्त लगना

लक्षण

- बदबूदार और पतला गोबर
- पशु का खाना–पीना और जुगाली बन्द करना
- प्यास अधिक लगना
- पशु का दुर्बल हो जाना

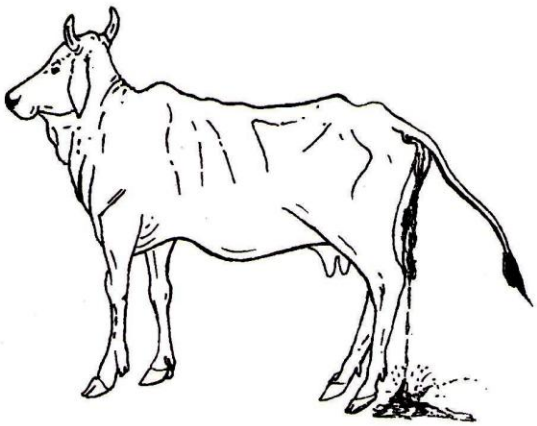

कारण

- खराब दाना और चारा खाना
- अधिक मेहनत करना
- सड़े–गले आहार लेना
- विषैले पदार्थ खा जाना

उपचार

- यदि कोई विषैला पदार्थ खाया हो तो पशु को पहले अरण्डी का तेल 100 मिली. पिलाना चाहिए। जिससे पेट साफ हो जाए। तत्पश्चात् दस्त रोकने के लिए कत्था 30 ग्राम, सौंठ 15 ग्राम, खड़िया चूर्ण 60 ग्राम, बेलगिरी 30 ग्राम, अफीम या पोस्त की डोडी 4 ग्राम पाउडर बनाकर चार बराबर मात्रा में सुबह शाम पानी से पिलावें।
- यदि रोग दूषित चारे के खाने से हुआ है तो हल्का सुपाच्य आहार दें।
- मुल्तानी मिट्टी को चावल के माण्ड के साथ पिलाने से भी लाभ होता है।
- आराम नहीं आने पर चिकित्सक की सलाह लें।

5. कब्ज

लक्षण

- मल त्याग देर से और कष्टप्रद होना
- भूख न लगना
- मल से दुर्गन्ध आना
- साँस से बदबू आना
- शरीर का दुर्बल होना
- पेट में हल्का दर्द रहना

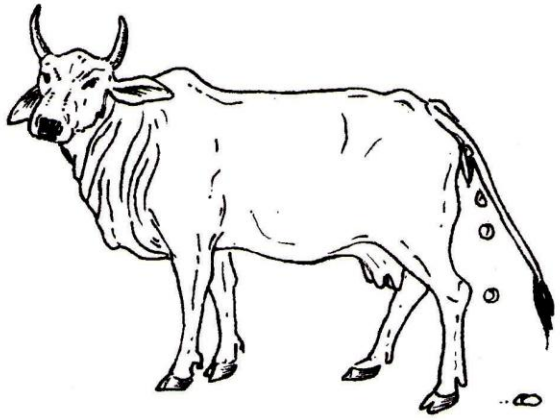

कारण

- शुष्क एवं भारी आहार
- दूषित आहार
- पानी की कमी
- रेशेदार खाद्य पदार्थो की भोजन में कमी
- सड़ा–गला व मिट्टी युक्त भोजन खाना
- कम मेहनत या व्यायाम

उपचार

- हाथ में अलसी अथवा सरसों का तेल या साबुन लगाकर गुदा में हाथ डालकर गोबर निकाल देना चाहिए। तत्पश्चात् एनीमा लगा देना चाहिए।
- तारपीन का तेल 30 मिली. तथा अलसी का तेल 400 ग्राम मिलाकर पिलावें।
- एमोन कार्य 15 ग्राम, मीठा सोडा 30 ग्राम, कुचला 3 ग्राम सबकों मिलाकर सबुह–शाम दें।
- पशु का उचित व्यायाम कराया जाए।
- नमक, सौंठ चूर्ण तथा शीरा मिलाकर पिलावें।
- पर्याप्त मात्रा में पानी पिलावें।

6. मिट्टी इत्यादि खाना

इस रोग को पाइका भी कहते है। इसमें पशु प्रायः मिट्टी, ईट, कागज, कपड़े, जूतें, प्लास्टिक की वस्तुएं खाने लगता है। इसके अतिरिक्त दूसरों का अथवा अपना मूत्र पीने लगता है।

कारण

- फास्फोरस और कैल्शियम की कमी

- आहार में नमक की कमी
- भोजन में गड़बड़ी

उपचार

- प्रतिदिन 50 से 100 ग्राम नमक खिलाना चाहिए।
- पशु के ठाण में लवण की ईट रखी जा सकती है।
- ठाक में काला अथवा सेन्धा नमक भी रखा जा सकता है।
- चिरायता चूर्ण 15 ग्राम, सौंठ चूर्ण 8 ग्राम, कुटकी चूर्ण 15 ग्राम, शुद्वकुचला 3 ग्राम तथा हरा कसीस 3 ग्राम मिलाकर दिन में दो बार दें।
- यूरिया मोलासिस ईंट भी इस रोग में लाभदायक है।

7. मुख प्रदाह/छाले

लक्षण

- इस रोग में मुख लाला हो जाता है।
- मुँह में छाले पड़ जाते है और मुँह से लार गिरती है। कभी–कभी फफोले फूट कर घाव बन जाते है। इस रोग में पशु को बहुत कष्ट होता है। वह न तो कुछ खा सकता है और न ही चर सकता है।
- इस रोग में मुख में दुर्गन्ध आती है।
- शरीर का तापमान बढ़ जाता है।

कारण

- चोट लगना एवं घाव होना
- जीवाणु संक्रमण होना
- फफूंद संक्रमण होना

उपचार

- बोरोग्लिसरीन या बोरेक्स ग्लिसरीन घावों पर लगावें।
- फिटकरी के 1–1 घोल से मुँह की धुलाई करनी चाहिए।
- पोटेशियम परमैंगनेट का विलयन लगया जाना चाहिए।
- हालात गंभीर होने पर, बोरिक एसिड तथा ग्लिसरीन दोनों को मिलाकर लगावें
- इसके अतिरिक्त पोटेशियम क्लोरेट 120 मिग्रा. सुहागा 120 मिग्रा. ग्लिसरीन .06 ग्राम, जल 500 मिली. मिलाकर घावों पर लगावें।
- पशुओं को कोमल पौष्टिक आहार जैसे – चावल का मांड, अलसी की चाय, हरा चारा इत्यादि देवें।
- इसके अतिरिक्त विटामिन्स और एन्टीबायोटिक दवाइयों का इस्तेमाल चिकित्सकीय परामर्श से करना चाहिए।

8. भोजन नली में रूकावट

लक्षण

- भोजन नली में सूजन
- पशु को भोजन निगलने में कष्ट होना
- साँसे जोर–जोर से चलना
- मुह से लार और झाग का निकलना

- तापमान में वृद्विहो जाना
- वमन / उल्टी की सम्भावना होना
- पशु का उदास रहना

कारण

- अधिक गर्म एवं ठंडा आहार लेना
- खट्टे पदार्थो का सेवन करना
- नुकीले बाहरी पदार्थो का निगलना
- भोजन नली के ऊपर बाहरी चोट लगना
- बाहरी ठोस वस्तु आदि से आघात
- जलन पैदा करने वाले पदार्थो का सेवन

उपचार

- इस रोग में उपचार से पूर्व जाँच करवा लेनी चाहिए।
- गले में कोई वस्तु अटकी हुई तो तो गले को सहलाकार ऊपर या नीचे करने का प्रयत्न करना चाहिये।
- यदि कोई नुकीली वस्तु अटकी हुई हो तो चिमटी की मदद से निकाला जा सकता है।
- गर्म पानी की थैली से बाह्य सिकाई करें।
- दर्द अधिक होने पर दर्द निरोधक गोली अथवा इंजेक्शन दें।
- चिकित्सक से आवश्यक परामर्श लें।
- औषधि या अन्य कारण के असफल होने पर शल्य क्रिया करवायें।

9. सर्दी-खाँसी-जुकाम

लक्षण

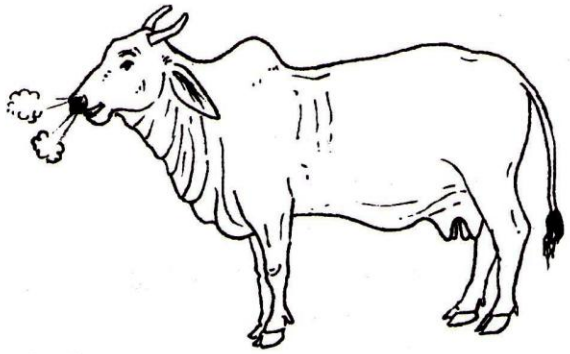

- पशु को खाँसी चलना
- नाक से हरा–पीला स्राव होना
- आँखों से पानी गिरना
- पशु का अपनी नाक को जमीन से रगड़ना
- सांस लेने में कष्ट होना
- आवाज के साथ सांस लेना

कारण

- सर्दी / ठण्ड
- धूल, धुंआ, विषैली गैस
- विषाणु अथवा जीवाणु या फफूंदी
- फैक्टरी की धुंआ या अमोनिया आदि रासायनिक पदार्थो से

उपचार

- नथुनों को गुनगुने पानी से साफ करें।
- नाक में कीटाणुनाशन भाप दें। इसके लिए सफेदा अथवा यूकेलिप्टस के तेल को 1 बाल्टी गर्म पानी में मिलाकर उसकी भाप पशु को दें। भाप देते समय पशु के सिर पर टॉवल या चादर ढक दें।
- पशु के नथुने पर विक्स लगावें।

- तापक्रम में वृद्वि(बुखार) होने पर पैरासिटामोल दवाई 25–30 ग्राम बड़े पशु को तथा 5–15 ग्राम छोटे पशु को दे सकते है।
- चिकित्सकीय परामर्श उपरान्त एन्टीबायोटिक्स का उपयोग करें।

10. ब्रोन्कान्टिस (तीव्र खाँसी)

लक्षण

- पशु के सूखी खाँसी का चलना बाद में गीली खाँसी का चलना
- नाक से तरल द्रव स्रावित होना।
- आहार लेना कम कर देना
- खांसी के अन्तराल का निरन्तर जारी रहना
- श्वसन गति में वृद्विहोना
- पशु का दूध कम देना

कारण

- धूल, कचरा, विषैले धुएं, रासायनिक पदार्थ अथवा उनकी गैस आदि
- वातावरण में अचानक परिवर्तन
- सर्द हवा एवं ठण्ड
- व्यायाम के बाद शीघ्र पानी पीना
- सर्दियों में ठण्डे पानी से स्नान
- जीवाणु एवं विषाणु द्वारा

उपचार

- इस रोग के प्रारम्भ में ही उपचार कर लेना चाहिए अन्यथा गंभीर रोग में परिवर्तित हो जाता है।
- पशु को स्वच्छ तथा खुली वायु में रखना चाहिए।
- यूकेलिप्टस तेल या तारपीन का तेल को गर्म पानी में मिलाकर वाष्प देनी चाहिए।
- कफ निरोधक औषधियों का प्रयोग करना चाहिए।
- मुलैठी 20 ग्राम, नौसादर 8 ग्राम, कपूर चूर्ण 3 ग्राम, गुड़ या शीरा (आवश्यकतानुसार) सबको मिलाकर चटनी चटायें।
- रोग के बढ़ने पर चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

11. न्यूमोनिया

यह श्वसन समबन्धी रोग है।

लक्षण

- फेंफड़ो में सूजन आ जाना
- पशु का शरीर कांपना
- शरीर के तापक्रम में वृद्विहोना
- सांस लेने में कठिनाई होना एवं सांसें तेज गति से चलना
- छाती में दर्द, कफ–खाँसी तथा बलगम के साथ खून के धब्बे आना
- नाक से तरल का स्राव होना एवं उस स्राव से बदबू आना

कारण

- ठण्ड एवं सर्दी लगना
- पशुशाला गंदी तथा संक्रमित होना
- अपर्याप्त संतुलित भोजन
- गलत तरीके से दवा देना
- अधिक समय तक भूखा रहना
- वातावरणीय परिवर्तन (अचानक)
- शारीरिक दुर्बलता
- ब्रोन्काइटिस रोग का वृहत रूप
- जीवाणुओं द्वारा

उपचार

- पशु को सर्दी से बचाकर तथा हवादार स्थान पर रखें।
- पीने के लिए गुनगुना पानी देना चाहिए।
- गर्म पानी में तारपीन का तेल व यूकेलिप्टस का तेल मिलाकर उसकी वाष्प सुंघायें।
- नौसादर, कुचला, मुलैठी, गुड़ या शीरा को मिलाकर चटनी बनाकर दिन में दो बार चटावें।
- आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श लें।

ध्यान दें-

यदि पशु का तापमान अचानक कम हो जाए तो यह खतरनाक होता है, क्योंकि पशु देखनें में ठीक दिखाई देता है परन्तु स्राव आना निरन्तर जारी रहता है। इस अवस्था के कुछ समय बाद अचानक पशु की मृत्यु हो जाती है। अतः इस अवस्था में पशु को निकट के पशु चिकित्सा केन्द्र में दिखाना चाहिए।

12. हाँफना

लक्षण

- सांस लेने में परेशानी होना
- हाँफने लगना, छाया में भी हाँफते रहना
- शारीरिक ग्रंथियों में रूकावट

उपचार

- पशु को विटामिन 'A' युक्त आहार एवं औषधि दी जानी चाहिए।
- पीने के पानी में 15–30 ग्राम नमक देना चाहिए।
- हिमालय बत्तीसा 30–50 ग्राम दिन में दो बार दें।
- चिकित्सक के परामर्श से औषधि दी जानी चाहिए।

13. रक्त की कमी (एनीमिया)

इस रोग में पशु के रक्त में लाल रूधिर कणिकाओं की कमी हो जाती है। पौष्टिक आहार की कमी एवं लाल रक्त कणिकाओं के निर्माण में रूकावट के कारण यह रोग प्रकट होता है।

लक्षण

- शरीर पीला, दुर्बल और कमजोर हो जाना
- श्वसन गति व नाड़ी की गति तीव्र चलना

- शीघ्र ही थक जाना
- शरीर का तापमान सामान्य से कम रहना
- कभी–कभी शरीर में कंपकपी व थर्राट रहना

उपचार

- आयरन या लोह युक्त खाद्य पदार्थो की मात्रा अधिक देनी चाहिए।
- आयरन के कैप्सूल या इंजेक्शन नियमित रूप से देना चाहिए।
- भोजन में हरे चारे की मात्रा में वृद्विकरनी चाहिए।
- साधारण नमक 250 ग्राम 1 लीटर पानी में मुख द्वारा दें।
- डॉक्टर की सलाह से टॉनिक पिलावें।

14. पथरी/पेशाब में रूकावट

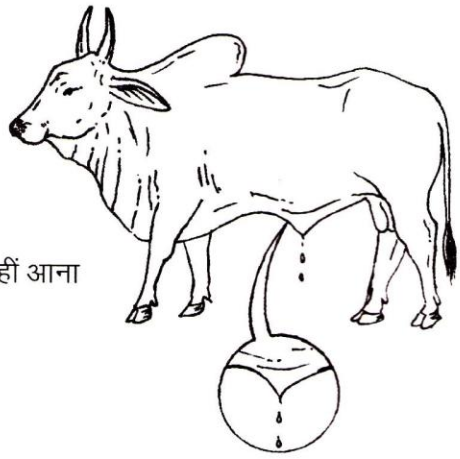

लक्षण

- पेशाब आने में बहुत कष्ट होना
- पेशाब रूक–रूक कर आना
- पेशाब के साथ–साथ रक्त की बूदें भी आना
- पेशाब जाने की बार–बार इच्छा होना परन्तु पेशाब खुलकर नहीं आना
- पेट में दर्द रहना

कारण

- कम पानी पीने से
- निर्जलीकरण के कारण
- पेशाब में लवणता की अधिकता से
- अम्ल की अधिकता से
- पेशाब तन्त्र में संक्रमण से
- कठोर जल के सेवन से जिसमें कैल्शियम की मात्रा अधिक हो
- विटामिन 'A' की कमी से
- जनन हारमोन्स का अधिक स्रावित होना

उपचार

- संक्रमण होने पर डॉक्टरी परामर्श से एन्टीबायोटिक्स लेनी चाहिए।
- पशु को पर्याप्त पानी पिलाना चाहिए।
- विटामिन 'A'युक्त आहार दें।
- क्षारीय पदार्थों का उपयोग करें।
- स्टोनील पाउडर 50 ग्राम बड़े पशुओं को तथा 15–20 ग्राम छोटे पशुओं को दिन में दो बार दें
- आवश्यकता होने पर शल्य चिकित्सा द्वारा पथरी निकलवा देनी चाहिए।

15. लू लगना

यह रोग गर्मियों में होता है। लू लगने का मुख्य कारण धूप होता है। इसके अतिरिक्त गर्मी में अधिक काम करने से लू लग जाती है। गर्म स्थान पर बंद रहने से अथवा पानी की कमी से भी लू लग सकती है।

- पशु का सुस्त हो जाना
- पसीना निकलना बन्द हो जाना
- मुंह से साँस लेना
- नाक और मुह से झागयुक्त स्राव आना
- ज्वर हो जाना
- जीभ सूखना
- बेचैनी अनुभव करना
- मूर्च्छा अथवा बेहोशी तक हो जाना

उपचार

- पशु को छायादार एवं हवादार कमरे में रखना चाहिए।
- शरीर का तापमान नियंत्रित रखना चाहिए। इसके लिए सिर पर बर्फ की ठण्डी पट्टी अथवा ठण्डे जल से नहलाना चाहिए।
- बर्फ के टुकड़े पशु की त्वचा पर रगड़ने चाहिए।
- ठण्डा पानी पीने के लिए दें।
- नमक मिला पानी पर्याप्त मात्रा में पिलाना चाहिए।
- अमोनियम कार्बोनेट को गुड़ के पानी में मिलाकर पिलावें।
- रोग की गंभीरता को देखते हुए चिकित्सक की सलाह लें।

16. आर्थराइटिस (गठिया)

यह हड्डियों का रोग होता है। यह एक खतरनाक रोग है क्योंकि यह रोग लम्बे समय तक रह सकता है। इससे पशु की कार्यक्षमता बिल्कुल कम हो जाती है।

लक्षण

- हड्डियों के जोड़ों में सूजन आ जाना
- जोड़ों में दर्द रहना
- कभी–कभी दर्द के साथ बुखार आना
- सूजन की जगह जल समान द्रव भरा होना
- पशु घूमने–फिरने में परेशानी महसूस करना

कारण

- जीवाणुओं द्वारा
- संक्रमण द्वारा
- पैतृक प्रवृति
- बाहरी चोट द्वारा

उपचार

- इस रोग का कोई संतोषजनक उपचार नहीं है।
- इस रोग में पशु को पूर्ण विश्राम दिया जाना चाहिए।
- यदि चोट के कारण ऐसा हुआ है तो उस स्थान विशेष पर आयोडेक्स की मालिश दिन में दो बार करें।
- दर्द होने पर दर्द निरोधक दवाईयां दें।

- जोड़ो पर गर्म पानी में नमक डालकर सेंक करें।
- इस रोग में इलाज लम्बर चलता है अतः पूर्ण इलाज करवायें।
- चिकित्सक से परामर्श लें।

17. मिल्क फीवर

इस रोग में कैल्शियम की कमी हो जाती है। यह एक अजीब रोग है यह रोग विशेषतः अधिक दूध देने वाले पशुओं में होता है तथा दूसरे से पांचवे ब्यांत के मध्य होता है। यह रोग मुख्यतः सर्द ऋतु में होता है। गाय–भैंस प्रसव के तुरनत बाद या 72 घण्टे में मूर्छित हो जाती हे। समय पर चिकितसक की राय नहीं ली जायें तो इस रोग में 3–4 दिन के भीतर पशु मर सकता है।

लक्षण

- पशु दाना–चारा लेना बन्द कर देना
- बहुत कमजोरी अनुभव करना
- खड़े होने व बैठने में असमर्थ होना
- आवाज के साथ सांसें लेना
- पिछले पैर कड़े हो जाना
- बच्चे को दूध नहीं पिलाना

कारण

- कैल्शियम की कमी इस रोग का मुख्य कारण है
- अधिक मेहनत
- थायराइड ग्रंथि के हारमोन्स असंतुलन के कारण
- कोलस्ट्रम (ब्याने के तुरन्त बाद का पहला दूध) में कैल्शियल की अतिरिक्त मात्रा निकल जाने से
- पौष्टिक आहार में कमी से
- विटामिन 'D' की कमी से

उपचार

- इस रोग के लक्षण प्रकट होने पर तुरन्त चिकित्सक से इलाज करवाना चाहिए।
- कैल्शियम का इंजेक्शन देना चाहिए।
- प्रसव से पूर्व कैल्शियम तथा विटामिन 'D' की खुराक देनी चाहिए।
- यदि पूर्व में पशु इस रोग से ग्रसित हो तो उसे गर्भावस्था में 25–100 ग्राम तक नौसादर दिन में दो बार दें।
- रोग मुक्त होने पर हिमालय बत्तीसा को गुड़ या शीरा और आटा के साथ खाने को दें।

18. गर्भावस्था की विषाक्तता

यह रोग भेड़–बकरियों में पाया जाता है जो कि घातक बिमारी है। यह रोग गर्भावस्था के अन्तिम दिनों में होता है। इस रोग का कारण रक्त में उपस्थित शर्करा की मात्रा का स्तर से कम होना है।

लक्षण

- भूख बन्द हो जाना।
- अवसाद की स्थिति में रहना।
- श्वास का तेज गति से चलना।
- किसी वस्तु के सहारे सिर टेक खड़ा रहना।

उपचार एवं बचाव

- पशु को धूप और गर्मी से बचाकर रखें।
- जल पर्याप्त मात्रा में पिलावें।
- एन्टीबायोटिक्स का उपयोग डॉक्टर की सलाह से करें।
- यदि गर्भस्थ शिशु गर्भ में ही मर जाये तो उसे ऑपरेशन के द्वारा बाहर निकाल देना चाहिए।

19. गर्भावस्था के रोग

प्रसवकाल में मुख्य रूप से निम्न रोग होते हैं–

(अ) गर्भपात

लक्षण

- गर्भस्थ शिशु समय से पूर्व जीवित अथवा मृत रूप में बाहर आ जाना।
- समय से पूर्व ही प्रसव के लक्षण दिखाई देने लगना।
- योनि से बदबूदार तरल स्त्रावित होना।

कारण

- बाहरी आघात द्वारा
- संक्रमण द्वारा
- हारमोन्स की कमी

उपचार

- गर्भपात के पश्चात एन्टीसेप्टिक दवा जैसे पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवा) से गर्भाशय की सफाई करें।
- पशु की जेर को बाहर निकाल देवें।
- एक बार गर्भपात होने पश्चात् पुनः गर्भधारण करने पर गर्भपात की आशंका बढ़ जाती है अतः पहले गर्भपात के पश्चात् उचित चिकित्सकीय परामर्श आवश्यक रूप से लें।

(ब) प्रसव में कष्ट

प्रसव के समय मादा पशु के बच्चा निकलने में काफी कष्ट या कठिनाई होती है जिससे भ्रूण बाहर नहीं निकल पाता है। कई बार घण्टों तक प्रसव नहीं हो पाता है।

कारण

- हारमोन्स की कमी
- योनि में गांठा होना
- गर्भाशय में ऐंठन
- भ्रूण की गर्भ में असामान्य स्थिति
- बच्चे का जननेन्द्रिय मार्ग के अनुपात में बड़ा होना
- एक साथ दो बच्चों का होना
- बच्चे का सही स्थिति में ना होना

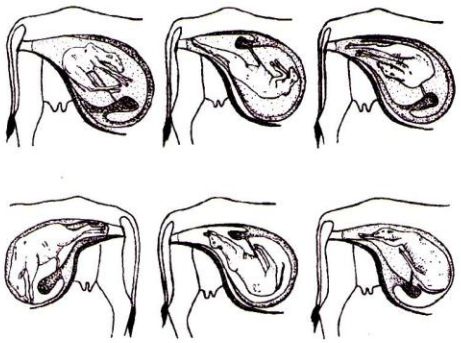

उपचार

- ऐसी स्थिति में रूकावट का पता लगाने के लिए हाथों को साफ धोकर व चिकनाई लगाकर योनि में डालकर गर्भ की स्थिति का पता लगाया जाना चाहिए।

- असामान्य स्थिति का ज्ञान होने पर पशु को निश्चेतक (बेहोश करने वाली दवा) दें। इसके पश्चात् स्वच्छ हाथों से भ्रूण की स्थिति सही करने का प्रयत्न करें।
- जननेन्द्रिय मार्ग में कोई भी तेल या ग्लिसरीन डालकर चिकना करें। तत्पश्चात् बच्चे को निकालने का प्रयास करें।
- यदि गर्भाशय में ऐंठन हो तो इसके लिए दो व्यक्ति अपनी बंद मुठ्ठियों से पशु के दोनों ओर की कोख एक के बाद एक करके क्रम से दबायें। एक व्यक्ति कोख को नीचे तथा अन्दर की ओर तथा दूसरा व्यक्ति ऊपर तथा अन्दर की ओर दबाता है ऐसा करने से गर्भाशय की ऐंठन दूर होकर बच्चा जन्म ले लेता है।
- भ्रूण निकालने का आखिरी उपचार शल्य क्रिया है जो कि चिकित्सक द्वारा कराया जाना चाहिए।

ध्यान दें-

अधिकांशतः देखा गया है कि ग्रामीणजन बच्चा निकालने के लिए गलत तरीकों का प्रयोग करते हैं या खींचतान करते हैं जिससे योनि मार्ग सूज जाता है और सेप्टिक होने से पशु मर भी जाता है।

(स) जेर/आंवल का रूकना

जेर या आंवल के द्वारा भ्रूण, गर्भावस्था में पोषण प्राप्त करता है जो कि गर्भाशय से जुड़ा रहता है, प्रसव पश्चात आंवल का गिरना नितान्त आवश्यक है। सामान्यतः जेर 1 घण्टे से 6 घण्टे के मध्य गिर जाती है परन्तु कई बार इस अवधि में जेर नहीं निकलती है। यदि जेर नहीं निकलती हैं यदि जेर नहीं निकलती है तो वह अन्दर ही अन्दर सड़ने लगती है। पशु की योनि से जेर लटकी हुई बाहर दिखती है। कभी–कभी जेर बिल्कुल दिखाई नहीं देती हैं रोग के बढ़ने पर पशु चारा–दाना लेना बन्द कर देता हे एवं कराहता है।

उपचार

- योनि में स्वच्छ हाथ को चिकना कर जेर को निकालने का प्रयास करें।
- सौंठ चूर्ण, सौंफ चूर्ण व शीरा या गुड़ क्रमशः 1:2:10 के अनुपात में 1 लीटर गुनगुने पानी में मिलाकर पिलावें।
- जेर निकालने के पश्चात लाल दवा (पोटेशियम परमैंगनेट) के घोल से डूश करना चाहिए। जब घोल का पानी साफ आने लगे तो डूश बन्द करके हथेली से योनि को बाहर की तरफ दबाते हुए समस्त घोल बाहर निकालें।
- संक्रमण के बचाव के लिए एन्टीबायोटिक्स का प्रयोग करें।
- यदि प्रसव के 6 घण्टे बाद भी जेर नहीं गिरती है तो चिकित्सक से परामर्श लें।

(द) गर्भाशय का बाहर निकलना

इसमें गर्भाशय योनि से बाहर लटक जाता है। कभी–कभी प्रसव पश्चात गर्भाशय उलट कर बाहर आ जाता है। योनि मुख से लाल रंग का भाग दिखाइ देता है। इसमें पशु को दर्द होता है उठने–बैठने के कारण धूल व गंदगी चिपक जाती है एवं छिल जाता है। हल्का–हल्का रक्त भी निकलने लगता है।

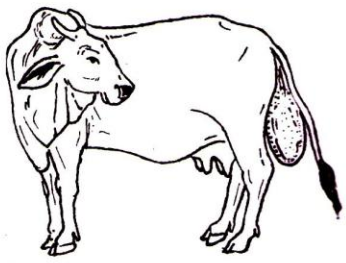

कारण

- कैल्शियम की कमी से
- अत्यधिक दबाव से
- प्रसव में अवरोध के कारण
- अत्यधिक कमजोरी
- गर्भाशय का अनियमित संकुचन
- अप्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा प्रसव के दौरान या जेर निकालने में हाथ के प्रयोग से

उपचार

बाहर निकले गर्भाशय को अतिशीघ्र पुनर्वस्था में लाने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा बाहर निकला हुआ

भाग ठेस हो जाता है जो कि कष्टकारक होता है एवं पुनः अन्दर करने में कठिनाई होती है। इसके लिए सर्वप्रथम पशु को बेहोश करने की दवाई दें।

तत्पश्चात पशु को साफ–सुथरे स्थान पर रखें जहां पिछला धड़ ऊँचा रहे। पोटेशियम परमैंगनेट अथवा डेटॉल युक्त गुनगुने पानी से योनि भाग को साफ करें। बाहर निकले भाग पर जाइलोकेन क्रीम लगाएं। उसके बाद निकले हुए भाग पर अलसी का तेल लगाते हुए हल्के–हल्के हाथों से उसे भीतर की ओर कर दें। योनि के मुख के आकार का रस्सी का जाल बनाकर उसके किनारों में लम्बी रस्सियां बांध कर योनि मुख पर लगाकर रस्सियां खींच कर गर्दन में कालर बनाकर कस कर बांध दें। इस प्रकार गर्भाशय का भाग बाहर नहीं निकलता है।

यदि योनि भाग अधिक समय तक बाहर निकला रह जाए तो उसे चिकित्सक की मदद लेनी चाहिए।

एन्टीबायोटिक्स गोलियां अथवा इंजेक्शन का प्रयोग चिकित्सक की सहायता से करें। समस्या अधिक होने पर चिकित्सक से इलाज करवायें।

20. रतौंधी

पशु के आहार में विटामिन 'A' की कमी से यह रोग हो जाता है। विटामिन 'A' शरीर की वृद्धि, आंखों की ज्योति, भ्रूण विकास एवं प्रजनन क्षता विकसित करने हेतु आवश्यक है।

लक्षण

- पशु को रात्रि में दिखाई देना बन्द हो जाना
- आंखों से पानी गिरना
- चमड़ी सूखी और खुरदरी हो जाना
- रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाना

उपचार

- पशु को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा खिलावें।
- बड़े पशुओं को विटामिन 'A' की खुराक इंजेक्शन के रूप में दें।
- मछली के तेल की एक चम्मच दूध में मिलाकर पिलावें।
- नवजात बच्चों को कोलेस्ट्राम (जन्म के तुरन्त बाद का दूध) पिलावें।
- विटामिन 'A' युक्त हरा चारा नियमित रूप से दें।

21. सींग टूटना

पशुओं के परस्पर लड़ने–झगड़ने पर अथवा गिरने से सींग में चोट लग जाती है। कभी–कभी सींग का ऊपरी खोल हट जाता है। सींग के टूटने से रक्त स्त्राव होता है। कभी–कभी नाक से भी रक्त स्त्राव होने लगता है।

उपचार

- यदि सींग का खोल हटा हो तो उस खोल का पुनः लगाकर टिंचर बेंजोइन की पट्टी बांध देनी चाहिए।
- यदि सींग टूट गया हो और खून बह रहा हो तो दागने वाले लोहे को गर्म करके टूटे सींग के स्थान पर दागने से खून आना बन्द हो जाता है।
- तत्पश्चात रूई से साफ करके ऐन्टीसेप्टिक (प्रतिरोधी) दवाई की गाज लगाकर पट्टी बांध दें।
- एन्टीबायोटिक इंजेक्शन लगवाएं।
- 2–3 दिन बाद देखें कि पट्टी गीली है या सूखी यदि सूखी हो तो उसे नहीं छेडें और यदि गीली हो तो उस पट्टी को खोलकर पुनः ड्रेसिंग कर नई पट्टी बांध दें।
- यदि सिंग टूटकर लटका हो तो उसे काट कर अलग कर दें। तत्पश्चात् उसकी ड्रेसिंग करें।

संक्रामक रोग

वे रोग जो बैक्टीरिया, वायरस अथवा फंगस से उत्पन्न होते हैं और एक पशु से दूसरे पशु में संसर्ग द्वारा फैलते हैं उन्हें संक्रामक रोग कहते हैं। संक्रामक रोग अथवा छूत की बीमारी इतनी खतरनाक होती है कि यदि तुरन्त चिकित्सा उपलब्ध नहीं होती है तो पशु मर जाते हैं। इसके अतिरिक्त संक्रमण पशुओं में शीघ्रता से फैलता है।
निम्न संक्रामक रोग मुख्य हैं–

1. गलघोंटू

यह जीवाणु द्वारा फैलता है। यह रोग प्रायः वर्षा ऋतु में उत्पन्न होता है। वैसे यह रोग बूंदा–बांदी के पश्चात् होता है। इस रोग की भयावहता इतनी अधिक होती है कि गांव के पशु इस रोग से खत्म हो जाते हैं।

लक्षण

- तेज बुखार तथा मुंह एवं गले में सूजन रहना
- पेट में पीड़ा होना
- दस्त लग जाना
- मुंह से तरल द्रव बहना
- कान नीचे की ओर लटक जाना
- सांस लेने में तकलीफ होना
- आंखे सूजकर लाल हो जाना (कभी–कभी)

कारण

- जीवाणु द्वारा
- दूषित चरागाह
- अचानक वातावरणीय परिवर्तन
- नमी युक्त वातावरण

बचाव एवं उपचार

- प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु से पूर्व इस रोग का टीका लगवा लेना चाहिए।
- पशुशाला स्वच्छ एवं साफ होनी चाहिए।
- बीमार पशु को तुरन्त प्रभाव से अन्य पशुओं से लग कर देना चाहिए।
- पोटेशियम परमैंगनेट पानी में मिलाकर पिलावें।
- रोग की सम्भावना ज्ञात होते ही तुरन्त चिकित्सक से परामर्श लें।
- रोगी पशु को स्वच्छ एवं हवादार स्थान पर रखें।
- खाने के लिए पशु को जौ का दलिया एवं पर्याप्त मात्रा में पानी पिलावें।
- दूषित चरागाहों पर स्वस्थ पशुओं को नहीं चरावें।
- मरे हुए पशुओं को गहरे गड्ढ़े खोदकर दबा देना चाहिए।

2. ऐन्थ्रेक्स

यह भी एक छूत की बीमारी है जिसमें पशु अचानक बीमार हो जाते हैं और फौरन मर जाते हैं। पशुओं से यह रोग मनुष्यों में भी फैल जाता है। यह रोग जीवाणु द्वारा होता है। इस बैक्टीरिया के स्पोर अनुकूल परिस्थितियों में जन्म लेते रहते हैं। ऑक्सीजन की उपस्थिति में स्पोर बनने लगते हैं।

लक्षण

- प्राकृतिक छिद्रों से काले रंग का चमकदार स्त्राव निकलना
- मरने से पहले प्शु अचानक लड़खड़ाना एवं कांपना
- सांस लेने में परेशानी होना
- रोग की तीव्र अवस्था में ज्वर रहना
- खून मिले दस्त होना
- 2–4 दिन में रोगी पशु की मृत्यु हो जाना।
- कुछ पशुओं के मुंह और जीभ पर छाले भी हो जाना एवं मुंह से लार स्त्राव होना

उपचार एवं बचाव

- बीमारी से बचाव के लिए 'सीरो वैक्सीनेशन' लगवाना चाहिए।
- एन्थ्रेक्स रोग से पीड़ित पशु को अलग कर देना चाहिए।
- च्रागारों पर प्रतिरोध नाशक दवाइयों का छिड़काव करना चाहिए।
- पशु की लार से निकला स्त्राव जमीन पर नहीं गिरने देना चाहिए।
- रोग का पता लगते ही तुरन्त चिकित्सक से परामर्श लें।
- मरे पशु को 6 फीट का गड्ढ़ा खोद दबा देना चाहिए या जला देना चाहिए।
- पशुपालक स्वयं भी सतर्क रहें क्योंकि यह रोग उनको भी लगा सकता है।

3. लंगड़ा बुखार

इस रोग को जहरबाद, फड़ सूजन या काला बाय भी कहा जाता है। यह रोग नमी वाले क्षेत्रों में अथवा वर्षा ऋतु में अधिक फैलता है।

लक्षण

- तीव्र ज्वर होना
- दाना–पानी लेना बन्द कर देना
- चलने में असमर्थ हो जाना
- पैरों के ऊपरी हिस्से, पुट्ठों एवं कन्धों पर सूजन आ जाना, जिनमें प्रारम्भ में दर्द होना लेकिन बाद में सूजन दर्दरहित हो जाना।
- सूजन के स्थान की चमड़ी सूख कर कड़क हो जाना और दबाने से दरार पड़ता
- सूजन वाले हिस्से पर कट लगाने से काले रंग का खून निकलना
- सूजन में वृद्धि अतिशीघ्र हो जाना
- इस रोग में तापक्रम का अचानक कम होना मृत्यु सूचक होता है।

कारण

- इस रोग का कारण जीवणु होता है। ये जीवाणु पशु के शरीर में असंख्यक मात्रा में पनप जाते है।

उपचार एवं बचाव

- वर्षा ऋतु से पूर्व टीका लगवाना चाहिए। पहला टीका 6 माह की आयु पर लगाया जाता है।
- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए।
- एन्टी ब्लैक क्वार्टर सीरम 100 मिली. त्वचा में दें।

- सूजन के स्थान में चीरा लगाकर गंदे रक्त को निकाल दें और उस स्थान पर लाल दवा अथवा कीटाणुनाशक औषधि भर दें।
- चीरे लगे हुए स्थान पर टींचर आयोडीन भी लगा सकते हैं।
- सूजन के चारों ओर पेनीसिलीन का इंजेक्शन जगह–जगह लगा दें।
- पोटेशियम परमैंगनेट और कपूर दोनों 3–3 ग्राम गुड़ या शीरा के साथ दें।
- चिकित्सक की परामर्श के अनुसार मुख द्वारा ऐन्टीसेप्टिक देना चाहिए।

4. परजीवी रोग

वर्षा ऋतु में पशुओं में आंतरिक परजीवी जनित रोग का प्रकोप अधिक रहता है। आन्तरिक परजीवी पशु के आन्तरिक अंगों जैसे– पेट, आंतें, रक्त, मांसपेशियों, गुर्दा, यकृत आदि में पाए जाते हैं। ये परजीवी विभिन्न अंगों को नुकसान पहुँचाते हैं।

लक्षण

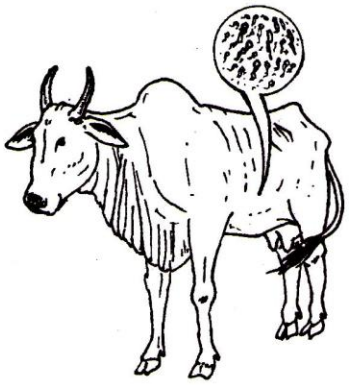

- पशु खाना–पीना कम कर देना
- पशु को कब्ज हो जाना अथवा कभी दस्त हो जाना
- पशु का पेट में दर्द अनुभव करना
- दस्त के साथ खून भी आना
- दस्त के साथ कीड़ों का आना निरन्तर जारी रहना
- पशु का कमजोर होना

रोकथाम

- वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होने पर चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवा देनी चाहिए और 15–20 दिनों के अन्तराल पर दवाई पिलाते रहना चाहिए।
- पशुओं को संतुलित एवं पौष्टिक आहार दें।
- बीमार पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए।
- आवास साफ–सुथरा रखें तथा वहां आर्द्रता या गीलापन नहीं रखना चाहिए।
- तालाब या दूषित पानी नहीं पिलाना चाहिए।

5. मुँहपका-खुरपका

यह विषाणुजनित रोग है। यह रोग खुरों वाले पशुओं में होता है। यह रोग बहुत तीव्र वेग से फैलता है। इस रोग का फैलाव दूध, गोबर अथवा पेशाब द्वारा होता है। यह रोग मुख्यतः ऋतुओं के बदलने के समय अर्थात सितम्बर–अक्टूबर एवं फरवरी–मार्च के समय होता है। इसके अतिरिक्त पशु की लार द्वारा भी यह रोग एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है।

लक्षण

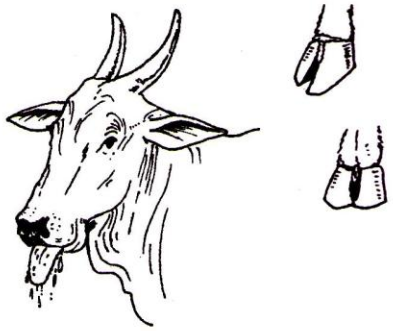

- पशु के 104 डिग्री से 105 डिग्री F तक बुखार रहना
- इस रोग में मुंह के छाले व तेज पीड़ा होना और मुंह से लार गिरना
- उत्पादन घट जाना व पशु का अत्यधिक कमजोर हो जाना
- थनों की कोमल त्वचा पर छाले हो जाना तथा रोग की तीव्रता से उन छालों में मवाद पड़ जाना

- खुरों के बीच का नर्म भाग जहां खुर त्वचा से जुड़ा रहता है वहाँ छाले हो जाना, घाव बन जाना एवं चलने में दर्द होना
- इस रोग से ग्रसित पशु को ठीक होन में 3 सप्ताह लग जाते है एवं पुनर्त्पादन प्राप्त करने में डेढ़ माह लग जाता है। विशेष रूप से संकर नस्लों में यह रोग फैलता है।

बचाव एवं उपचार

- रोगी पशु को सर्वप्रथम अन्य पशुओं से पृथक कर देना चाहिए।
- रोगी पशु के मुंह, जीभ व खुरों को पोटेशियम परमैगनेट के 0.1% घोल से दिन में 4–5 बार धोना चाहिए।
- पांवों एवं रोगी पशु के स्थान पर कीटाणुनाशक घोल जैसे–फिनाइल, बी.एच.सी. का पाउडर छिड़कना चाहिए।
- संक्रमण को रोकने के लिए पशु चिकित्सक की सलाह पर उपयुक्त एन्टीबायोटिक्स का प्रयोग करें।
- इस रोग से पशुओं को बचाने के लिए वर्ष में दो बार रोग निरोधक टीके लगावें।
- पशु को खाने के लिए हरा चारा, गेंहू की चापड़, बाजरे के दलिये को गुड़ के साथ लपटा बनाकर खिलाना चाहिए।
- चावल का मांड शीरे या गुड़ में मिलाकर देना चाहिए।

6. माता या रिण्डर पेस्ट

इस रोग को प्लेग अथवा पोंकनी माता भी कहते है। यह उच्च ज्वर वाला संक्रामक रोग है। यह रोग मुख्यतः बड़े पशुओं को प्रभावित करता है परन्तु कभी–कभी भेड़–बकरियों में भी हो जाता है। यह विषाणु जनित रोग है।

लक्षण

- पुश के तीव्र ज्वर होना
- पशु का कांपना एवं पतले दस्त हो जाना
- आंखें लाल, मुंह में जीभ के नीचे छाले, मुंह से लार व आंखों से पानी गिरना, पेशाब पीला और कम आना
- प्यास अधिक लगना और सांसे तेज चलना
- रोग की तीव्रता में दस्त के साथ खून का भी निकलना
- पशु कमजोरी के कारण शिथिल होकर नीचे गिर जाना
- 4–7 दिनों में पशु की मृत्यु हो जाना

बचाव व उपचार

- इस रोग से प्रभावित पशु प्रायः मर जाता है।
- बीमार पशु को हवादार एवं स्वच्छ वातावरण में रखें।
- आहार में चावल का मांड दें।
- कब्ज हो तो प्रचुर मात्रा में पानी पिलावें।
- जब दस्त लग रहे हों तो गुनगुने पानी में पोटेशियम परमैंगनेट मिलाकर 2–4 घण्टे में देते रहना चाहिए।
- ईसबगोल की भूसी को दही एवं आंवले के पानी के साथ गुड़ मिलाकर देते है। आवंलें के स्थान पर धनिए का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- यदि 24 घण्टे में दस्त में कमी न हो तो खड़िया या चाक 30 ग्राम, कत्था 10 ग्राम, सौंठ 15 ग्राम, अफीम 3 ग्राम और देशी शराब 60 मिली. लेकर आधा लीटर चावल के मांड के साथ दिन मे 2–3 बार देना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त लस्सी 2 लीटर, घी 30 ग्राम, कालीमिर्च के 11 दाने मिलाकर चावल के मांड में देने से भी दस्तों में लाभ होता है।

- स्वस्थ पशुओं को दस बीमारी से बचाने के लिए टीका लगवाना चाहिए।

7. क्षय रोग/टी.बी.

यह रोग एक जीवाणुजनित रोग है। इस रोग को तपेदिक अथवा राजयक्ष्मा भी कहा जाता है। इस रोग के जीवाणु बीत कठिनाई से खत्म होते है। यह रोग फेंफड़ें, अयन और पेट को प्रभावित करता है। क्षय रोग का फैलाव श्वास नली, भोजन नली, मूत्र मार्ग, अयन द्वारा तथा दूषित आहार के द्वारा होता है। इसके अतिरिक्त यह रोग माता–पिता से पैतृक रूप में भी मिलता है। यह एक दीर्घकालिक रोग है जो धीर–धीरे रोगी के शरीर पर प्रभाव डालता है।

लक्षण

- पशु का निरन्तर कमजोर होना
- खांसी चलती रहना
- नाक से तरल स्रावित होना
- भूख कम लगना
- हल्का ज्वर रहना
- पाचन शक्ति में कमी
- गले में गिल्टियां बन जाना

उपचार एवं बचाव

- सर्वप्रथम प्राथमिक लक्षणों के आधार पर पशु की जांच करवानी चाहिए। यदि जांच में टी.बी. होना पाया जाता है तो रोगी पशु को अन्य पशुओं से अलग कर देना चाहिए।
- चिकित्सक की सलाह से औषधियों का प्रयोग करना चाहिए।
- पौष्टिक आहार दिया जाना चाहिए।
- मछली का तेल और विटामिन्स की गोलियाँ देनी चाहिए।
- चिकित्सक द्वारा अनुदेशित पूरा कोर्स लेना चाहिए।
- रोगग्रस्त पशु को दूध नहीं पीना चाहिए।
- बछड़ों के जन्म के दूसरे सप्ताह में बी.सी.जी. का टीका लगवाना चाहिए।
- रोगी पशु के रहने के स्थान पर कीटाणुनाशक दवाईयों का छिड़काव करना चाहिए।

8. टिटनेस

यह जीवाणु जनित रोग होता है। इस रोग को धनुष्टंकार व लॉक–जा भी कहते हे। इस रोग में मांस–पेशियों में तनाव रहता है। इसके जीवाणु लम्बे समय तक जीवित रहते है। यह रोग घाव या चोट के कारण हो सकता है। इसके अतिरिक्त बधियाकरण के घाव या बधियाकरण में लाये गये औजारों से भी हो सकता है।

लक्षण

- पशु के शरीर में कड़ापन आना
- मांस–पेशियों में खिंचाव रहना
- कभी–कभी मुंह खुलना भी बन्द हो जाना
- पशु जमीन से चारा–दाना भी नहीं खा सकता
- बीमारी बढ़ने पर ज्वर आना

- सांस लेने में कष्ट होना
- पेट फूल जाना
- भोजन निगलने मे कठिनाई होना

उपचार एव बचाव

- शरीर के घावों को स्वच्छ व ऐन्टीसेप्टिक रखे जाने चाहिए।
- चोट या घाव होने पर ऐन्टीटिटनेस इंजेक्शन लगवाना चाहिए।
- पशु को शांत एंव अन्धेरे स्थान पर रखें।
- घाव वर एन्टीसेप्टिक विधि से ड्रेसिंग करें।
- बधियाकरण करने से पूर्व औजारों को विसंक्रमित कर लेना चाहिए।

9. थनैला

यह रोग कई जीवाणुओं के संक्रमण से होता है। इस रोग को मेस्टाइटिस अथवा शोथ भी कहा जाता है। इस रोग का कारण अयन या थनों मे चोट लगना माना जाता है। इसके अतिरिक्त पुशशाला का कुप्रबन्धन भी जिम्मेदार होता है। दूध दूहने की गलत तकनीक से भी यह रोग होता है।

लक्षण

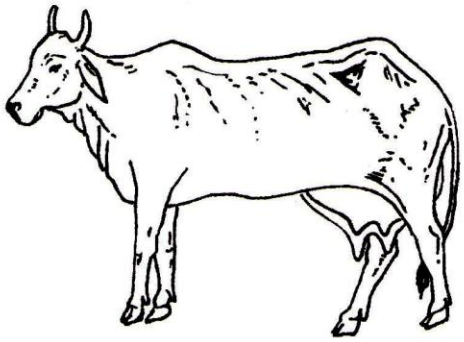

- अयन गर्म, लाल व दर्द युक्त होना
- अचानक दूध में कमी आना
- रोग की तीव्रता होने पर पशु दूध देना बन्द कर देना
- थनों से निकला दूध पहले कुछ पीला बाद में लाल रंग का
- अयन सख्त हो जाना
- पशु बेचैन व ज्वर होना
- इस रोग की पहचान दूध निकालने के बाद करनी चाहिए। इसके लिए थनों को थपथपाने पर थनों का समामान्य कड़ापन या फूला होना अथवा थनों का छोटा–बड़ा होना आदि से पता किया जाता है।
- यदि दूध के रंग आदि को देखकर संदेह हो तो परीक्षण करवा लेना चाहिए।

उपचार एवं बचाव

- यदि रोग का प्रारम्भिक अवस्था में पता चल जाए तो इसकी चिकित्सा सम्भव है।
- रोगग्रसित थनों एवं अयनों पर आयोडीन अथवा आयोडेक्स मलहम लगावें।
- गर्म पानी में बोरिक एसिड व नीम की पत्तियाँ उबालकर सेक किया जा सकता है।
- चिकित्सक के परामर्श से एन्टीबायोटिक्स एवं इन्जेक्शन देना चाहिए।
- इस रोग से ग्रसित पशु के दूध को उपयोग में नहीं लेना चाहिए।
- थनों एवं अयन पर लगी चोटों का अतिशीघ्र इलाज करना चाहिए।

मुर्गियों के रोग

मुर्गीपालन उत्पादन एवं आय का एक अच्छा स्रोत है परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि मुर्गियाँ स्वस्थ रहें। मुर्गियों में बीमारियाँ होने से कुक्कुट पालन में काफी नुकसान रहता है क्योंकि मुर्गियों में बीमारियाँ तीव्र गति से फैलती है जिससे मृत्युदर भी अधिक रहती है।

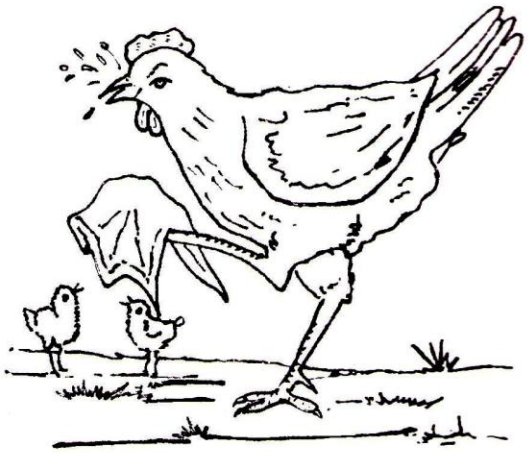

बीमार मुर्गियों के निम्न लक्षण हैं-

- वजन में कमी
- पेट फूला हुआ
- तापक्रम में परिवर्तन (कम/अधिक)
- कलंगी मुरझाई हुई एवं पीले रंग की
- सांस लेते समय आवाज का आना
- चंचलता में कमी
- टांगों में सूजन
- प्यास अधिक लगना
- दस्त लगना
- दाना न चुगना या कम चुगना
- पंखों का गिरना

रोग से बचाव के उपाय

- सरकारी फार्मों से ही मुर्गे–मुर्गियाँ खरीदें।
- खरीदते समय यह सुनिश्चित करें कि उनके टीके लगे हुए हो।
- सदैव पौष्टिक आहार व दाने देना चाहिए।

टीकाकरण

- प्रथम दिन के चूजे में– मेरेक्स टीका
- 2–7 दिन पर– रानीखेत एफ–1 स्ट्रेन टीका
- 13–17 दिन पर– गमबोरो टीका
- 6 सप्ताह पर– रानी खेत आर–बी टीका
- 8 सप्ताह पर– आउल पोक्स टीका
- 16 सप्ताह की उम्र पर– रानीखेत आर 2 बी स्ट्रेन टीका।
- 6 सप्ताह से अधिक आयु के बच्चों व मुर्गियों को पेट के कीड़े मारने के लिए औषधि देनी चाहिए।

मुर्गियों के रोग

1. रानीखेत

यह विषाणुजनित तथा संक्रमक रोग है।

लक्षण

- ज्वर होना।
- मुंह खोल कर सांस लेना

- सांसें तेज गति से चलना
- छीकें आना।
- पैरों का लड़खड़ाना
- दाना चुगना बन्द कर देना
- सांस के साथ घरघराहट की आवाज आना
- दस्त हरे या पीले पानी जैसे दुर्गन्ध युक्त होना
- पक्षी का आकाश की ओर देखना

उपचार एवं बचाव

- इस रोग का कोई उपयुक्त नहीं है।
- इस रोग से बचाव हेतु टीका लगवाना चाहिए।
- संक्रामक काल में पोटेशियम परमैंगनेट का पानी पिलाना चाहिए।
- विटामिन्स व पानी की मात्रा में चौगुनी वृद्धि कर देनी चाहिए।
- बीमार मुर्गियों को तुरन्त प्रभाव से पृथक कर देना चाहिए।
- कीटाणुनाशक घोल का छिड़काव करना चाहिए।
- मृत मुर्गियों को जला देना अथवा गहरा गड्डा खोदकर दबा देना चाहिए।

2. चेचक या फाउल पोक्स

यह रोग विषाणुजनित संक्रामक रोग है। यह रोग आपस में एक–दूसरे को चोंच मारने से हो जाता है इसके अतिरिक्त दूषित वायु द्वारा भी फैलता है। इस रोग में पक्षी मरता तो नहीं है परन्तु कइ सप्ताह तक अण्डे देने की क्षमता में कमी आ जाती है। यह रोग 3–4 सप्ताह तक चलता है।

लक्षण

- कलंगी के आस–पास की त्वचा, आँख की पुतली, मुंह, सिर की त्वचा पर फुंसियों जैसे छोटे–छोटे दाने हो जाते है।
- 3–4 सप्ताह बाद ये दाने सूख जाते है और पपड़ी के रूप में दिखाई देते है।
- नाक से पीला स्राव व छीकें आती है।
- सांस लेने से परेशानी होती है।
- आँखों से पानी बहता है।
- फुंसियाँ होने से दाना–पानी लेने में परेशानी होती है।
- अंण्डे के उत्पादन में कमी।

उपचार एवं बचाव

- चिकित्सक के परामर्श से एन्टीबायोटिक्स का प्रयोग करें।
- फुंसियों को गर्म पानी में डेटॉल डालकर धोना चाहिए और घावों पर 2 प्रतिशत नीला थोथा का घोल लगावें।
- विटामिन्स नियमित रूप से देते रहना चाहिए जिससे प्रतिरोधक क्षमता में कमी न हो।
- इस रोग का एकमात्र बचाव और उपचार टीकाकरण है।
- रोगी मुर्गियों की अलग व्यवस्था करें।
- मृत मुर्गियों को जला देना अथवा गहरा गड्डा खोदकर दबा देना चाहिए।

Gramin Vikas Vigyan Samiti (GRAVIS) or Center of People's Science for Rural Development is a non-governmental, voluntary organization that takes a Gandhian approach to rural development by working with the poor of the Thar Desert to enable them to help themselves. Since its inception in 1983. GRAVIS has worked with over 55,000 desert families across over 1,200 villages in Rajasthan reaching a population of over 1 million, and has established over 2,500 Community Based Organizations (CBOs). Through its dedicated field work, as well as its research and publications, GRAVIS has come to occupy a leading position amongst the voluntary organizations in the region.

Gravis

3/437/ 458, M.M. Colony, Pal Road,
Jodhpur - 342 008 Rajasthan, India.

Phones : 91 291 2785 317, 2785 116
Fax : 91 291 2785 116
Email : email@gravis.org.in

www.gravis.org.in

© 2013 GRAVIS
All rights reserved